B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA
(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)
BA DEGREE-1
HISTORY HONS.
UNIT-2(II)
DEPARTMENT OF HISTORY
PANKAJ KUMAR MISHRA
DATE-31/10/2020

TOPIC- जैन धर्म की भारतीय संस्कृति की देन

PART-2

Scanned with CamScanner

जैन धर्म की भारतीय संस्कृति को देन, भाग-2

साहित्य के क्षेत्र में –

भाषा और साहित्य के क्षेत्र में भी जैन धर्म ने सांस्कृतिक समन्वय को प्रोत्साहन दिया। जैनाचार्यों ने संस्कृत को ही नहीं, अपितु अन्य सभी प्रचलित लोक भाषाओं को अपनाकर उन्हें समुचित सम्मान दिया। जहाँ-जहाँ भी वे गये, वहाँ-वहाँ की भाषाओं को – चाहे वे आर्य परिवार की हों, चाहे द्रविड़ परिवार की – अपने उपदेश और साहित्य का माध्यम बनाया। इसी उदार प्रवृत्ति के कारण मध्ययुगीन विभिन्न जनपदीय भाषाओं के मूल रूप सुरक्षित रह सके हैं। आज जब भाषा के नाम पर भारी विवाद और मतभेद हैं; तब ऐसे समय में जैन धर्म की यह उदार दृष्टि अभिनंदनीय ही नहीं, अनुकरणीय भी है और इससे हम अपनी सांस्कृतिक एकता को कायम रखने में अधिक सफल होंगे।

संस्कृत और प्राकृत भाषा साहित्य को जैन लेखकों ने बहुत समृद्ध किया और समस्त भारतीय पौराणिक सामग्री को अपने मान्यताओं के साथ समन्वित किया। इससे भारत के आध्यात्मिक चिंतन को सर्वसाधारण तक पहुँचाने में बड़ी सहायता मिली। विमलसूरि ने प्राकृत भाषा में "पउमचरिय" (पद्मचरित) रामकथा को जैन रूप दिया। सातवीं सदी में रविषेण ने "पद्मपुराण" की रचना की और स्वयंभू ने अपभ्रंश में "पउमचरिउ" लिखा। आठवीं सदी में जिनसेन द्वितीय ने 'हरिवंशपुराण" की रचना की, जो महाभारत और हरिवंश का जैन रूपांतर था। तेरहवीं सदी में देवप्रभ ने "पांडव-चरित लिखा। सोलहवीं सदी में शुभचंद्र ने "पांडव पुराण" की रचना की। कथा साहित्य के विकास में तो जैन लेखकों ने कमाल कर दिया। पादलिप्त ने "तरंगवती" की रचना की। चौदहवीं सदी में इसी रचना के आधार पर 'तरंगलोला" बनी। आठवीं सदी में हरिभद्र ने "समराइच्च कहा", दसवीं सदी में सिद्धर्षि ने 'उपमिति प्रपंच कथा', चौदहवीं सदी में धनचंद्र ने "मलय सुंदरी कथा" और बाद में कुशल विजय ने "पद्मावती कथा" की रचना की। नाटक और गीत-काव्य के क्षेत्र में भी लेखकों की बड़ी देन है उनके लिखे 'हमीर मद मर्दन", "मोहराज पराजय" और "प्रबुद्ध-रौहिणेय" बहुत अच्छे नाटक हैं नीति, दर्शन और व्याकरण; ज्योतिष तथा चिकित्सा पर भी अनेक ग्रंथों की रचना की गई है। जैन ग्रंथों की यह उपयोगिता इस बात

हैं भी निहित है कि ये प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के महत्वपूर्ण साधन भी है।

Pankaj
31/10/2020

Scanned with CamScanner